करने के लिए आदि। ...के अधिकारों को सुनिश्चित

S.B.Cly Sc-101 Sem-1 15.07.21

सामाजिक आन्दोलन के प्रकार

सामाजिक आन्दोलन अनेक प्रकार के होते हैं। उन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है

- *प्रतिदानात्मक **अथवा** रूपान्तरणकारी आन्दोलन* प्रतिदानात्मक सामाजिक आन्दोलन का लक्ष्य अपने व्यक्तिगत सदस्यों की व्यक्तिगत चेतना तथा गतिविधियों में परिवर्तन लाना होता है।
- *सुधारवादी सामाजिक आन्दोलन* सुधारवादी सामाजिक आन्दोलन वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक विन्यास को धीमे प्रगतिशील चरणों द्वारा बदलने का प्रयास करता है। भारत के राज्यों को भाषा के आधार पर पुनर्गठित करना या सूचना के अधिकार का अभियान संचालित करना सुधारवादी आन्दोलन के उदाहरण माने जाते हैं।
- *क्रान्तिकारी सामाजिक आन्दोलन* इसके अन्तर्गत सामाजिक सम्बन्धों के आमूल रूपान्तरण का प्रयास करते हैं। ऐसे आन्दोलन सामान्यत: हुकूमत के विरुद्ध की जाती है। क्रान्तिकारी सामाजिक आन्दोलन प्राय: राज्यसत्ता पर अधिकार के द्वारा की जाती है। रूस की बोल्शेविक क्रान्ति जिसने जार शासक को सत्ता से बेदखल कर वहाँ साम्यवादी सरकार की स्थापना की तथा भारत में नक्सली आन्दोलन क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रतीक माने जाते हैं।

सामाजिक आन्दोलनों के सिद्धान्त

सामाजिक आन्दोलनों के प्रमुख सिद्धान्त निम्न हैं

सापेक्षिक वंचन के सिद्धान्त

सापेक्षिक वंचन के सिद्धान्त (Relative Deprivation Theory) के अनुसार सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है, जब सामाजिक समूह यह महसूस करता है कि वह अपने आस-पास के अन्य लोगों से खराब स्थिति में है। ऐसा संघर्ष सफल सामूहिक विरोध के रूप में परिणत हो सकता है। यह सिद्धान्त सामाजिक आन्दोलनों को भड़काने में मनोवैज्ञानिक कारकों; जैसे—क्षोभ तथा रोष की भूमिका पर विशेष रूप से बल देता है।